एक पगडंडी सड़क हो गई

एक छोटी सी पगडंडी इठलाती हिचकोले खाती,
गुमनाम सी अनंत तक चलती थी।
किनारे पर झूलते पत्ते मंदिर की घंटियों समान छू जाती थी।
टहनियों के जाल में छुपे हुए घोंसलों से, चीं–चीं आवाजें आती थी।

मोटर जो कभी धूल उड़ाती तो टहनियाँ ही उसे साफ कर देती थीं।
एक छोटी सी अनंत सी पगडंडी में एक दुनिया ही समाई हुई थी।
फिर कुछ बदला इंसानों का एक झुंड आया,
कुछ पढ़ा लिखा कुछ अनपढ़ सा
हलचल हुई पेड़ कटे, घोंसेले हटे, वो पगडंडी कुछ बड़ी हो गई।

कुछ खुदा, कुछ भरा, आना जाना शुरू हुआ,
कुछ धूल उड़ी फिर कुछ और उड़ी
कण–कण से गुबार बना, गुबार उड़ा, दूर तक उड़ा, दफ्तर पहुँचा, शोर हुआ।

फिर कुछ बदला मशीनें आई, सफेद चमचमाता बना रास्ता।
फिर सब शांत हो गया, आज फिर पानी बरसा, दूर नई पत्तियाँ निकली
दूर नए घोंसले बने,घोंसलों से कभी–कभी चीं–चीं आवाजें आती हैं
अब पत्तियों की घंटियां दूर हैं, चिड़ियों की आवाजें दूर हैं
अब सड़क से दूर है,

गाड़ियों की कतार हो गई, पगडंडी अब सड़क हो गई
गुमनाम सी पगडंडी अब मशहूर हो गई।
वो दुनिया अब सड़क से दूर है।

रमेश पी. भोले
सहायक प्राध्यापक